12.07.2020.
13.07.2020.

B.A. खण्ड - I
अर्थशास्त्र (प्र.) : प्रथमपत्र
आर्थिक सिद्धान्त

डॉ० विपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा,
पी० पी० यू०, पटना।

प्रश्न मांग की लोच को परिभाषित करें। मांग की लोच की माप कैसे की जाती है? यह कितने प्रकार की होती है वर्णन करें। मॉंग की कीमत लोच का अर्थ ...

सामान्यतया, किसी वस्तु की कीमत में होनेवाली परिवर्तन के परिणामस्वरूप उस वस्तु की मांगी गयी मात्रा में होनेवाले परिवर्तन की माप को ही 'मांग की लोच' कहा जाता है। इस परिभाषा को आधुनिक अर्थशास्त्री 'बोल्डिंग एवं श्रीमती जॉन रॉबिन्सन' ने मांग की लोच को गणितीय रूप में परिभाषित किया है। 'श्रीमती रॉबिन्सन' के अनुसार "मॉंग की लोच किसी मूल्य या उत्पादन पर मूल्य में अल्प परिवर्तन के परिणामस्वरूप क्रय की गयी मात्रा के आनुपातिक परिवर्तन को मूल्य के आनुपातिक परिवर्तन से भाग देने पर प्राप्त होती है।" यह निम्नांकित सूत्र से स्पष्ट है,

$$\text{मांग की लोच} = \frac{\text{मॉंग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{मूल्य में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

जहॉं, E_d = लोच
Q_d = मॉंग की मात्रा तथा
P = मूल्य

उपर्युक्त

$$E_d = \frac{\Delta Q_d / Q_d}{\Delta P / P}$$

अतः यह कहना सही होगा कि 'मॉंग का मूल्य लोच' किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी मॉंगी गयी मात्रा में परिवर्तन की दर होती है।

'प्रो० बेनहम' के अनुसार, "मॉंग की लोच के विचार का सम्बन्ध मूल्य में होनेवाले छोटे से भी परिवर्तन के मॉंग की मात्रा पर पड़नेवाले प्रभाव से है।"

'प्रो० मेयर्स' के अनुसार, "मॉंग की लोच कीमत में हुए थोड़े से परिवर्तन के प्रत्युत्तर में खरीदी गयी मात्रा में होने वाले सापेक्षिक परिवर्तन का माप है, जो कि कीमत के परिवर्तन में भाग देने पर आये।"

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ~~आर्थिक चरों में बदलाव आने से~~ मांग की लोच का मतलब होता है आर्थिक चरों में बदलाव आने से मॉंग में आनेवाला बदलाव लेकिन लोच में यह स्पष्ट नहीं होता किस चर में बदलाव आया है और कितना बदलाव आया है। उपभोक्ता की आय में भी बदलाव आ सकता है, संबंधित वस्तुओं के मूल्य में भी बदलाव आ सकता है।

वहीं, दूसरी तरफ 'मॉंग की कीमत लोच' का मतलब होता है केवल वस्तु की कीमत में बदलाव आने से उसकी मॉंग में बदलाव आना अर्थात् कीमत के प्रति उस वस्तु की मॉंग कितनी संवेदनशील है।

यदि कीमत लोच ज्यादा है तो इसका अर्थ यह हुआ कि कीमत के बदलने से माँग में बड़ा बदलाव आता है एवं यदि यह कम है तो इसका अर्थ यह हुआ कि कीमतें बदलने से माँग पर बहुत कम असर पड़ता है। इसे उदाहरण के तौर पर इस प्रकार समझाया जा सकता है।

यदि उपभोक्ता की आय पहले 100 रु० मासिक से बढ़कर 150 रु० मासिक हो गयी और इसके साथ ही माल 10 इकाई से बढ़कर 15 इकाई हो गयी है तो यहाँ हम यह देख सकते हैं कि यहाँ जैसे उपभोक्ता की आय बढ़ी वैसे ही वस्तुओं की माँग में भी वृद्धि हो देखी गयी।

अब हम माँग की लोच की माप (गणना) की चर्चा करेंगे:

'माँग की लोच की गणना (माप) करने के लिए सर्वप्रथम हम यह ज्ञात करते हैं कि मान (value) के अन्य आर्थिक चर में कितने प्रतिशत का बदलाव आया एवं यह ज्ञात होने के बाद मांग के प्रतिशत बदलाव को अन्य आर्थिक चर के प्रतिशत बदलाव से विभाजित कर देते हैं। अब यदि लोच अधिक होती है तो इसका मतलब यह हुआ कि आर्थिक चरों में बदलाव से उस वस्तु की माँग पर ज्यादा प्रभाव पड़ते हैं। यदि यह कम होती है तो उस वस्तु पर अन्य आर्थिक चरों का बदलाव कम होता है।

'माँग की लोच' एवं 'माँग की कीमत लोच' को निम्नलिखित अलग-अलग सूत्रों की मदद से दर्शाया गया है:

$$\text{माँग की लोच } (E_d) = \frac{\text{माँग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{अन्य आर्थिक चर में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

अतः सूत्र से यह स्पष्ट है कि माँग की लोच केवल वस्तु की कीमत पर ही नहीं बल्कि बहुत सारे चरों पर निर्भर करती है। इस प्रकार विभिन्न चरों की वजह से मांग की लोच पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु वहीं दूसरी तरफ माँग की कीमत लोच में ऐसा नहीं है। यह केवल वस्तु की कीमत से लोच में परिवर्तन होता है।

माँग की कीमत लोच का सूत्र (Formula of Price elasticity of demand):

$$\text{मांग की कीमत लोच} = \frac{\text{माँग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{मूल्य में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

$$E_D = \frac{\Delta Q \times 100}{\Delta P \cdot 100}$$

$$E_D = \frac{\Delta Q}{Q} \cdot \frac{P}{\Delta P}$$

अतः उपरोक्त सूत्र से यह स्पष्ट होता है कि मांग की कीमत लोच में केवल मूल्य ही माँग को प्रभावित करता है।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से मांग की लोच, 'माँग की कीमत लोच' एवं इसकी गणना स्पष्ट हो जाती है।